ममता कालिया के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री पुरूष संबंध

इंदिरा वी.

प्रेसिडेंसी, केंपापुरा,हेब्बाल, बेंगलूरू.

Received:13/12/2024 ; Accepted: 10/01/2025 ; Published: 02/02/2025

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14788754

ABSTRACT:

ममता कालिया का हिंदी साहित्य में अद्वितीय स्थान है। ये एक एसी कामकाजी स्त्री है, जो औरतों की समस्याओं को भली-भांती समझकर उससे संबंधित रचनाऐ निरूपित करती हैं। इनकी हर रचना में ज्यादातर सच्चाई को ध्यान में रखकर इसका निवारण भी करने की चेष्टा है। नए जमाने के करवट बदलते रिश्तों को केंद्र में रखकर लिखा गया है। पति-पत्नी का रिश्ता, माता-पिता और संतान का रिश्ता, प्रेमी-प्रेमिका का रिश्ता, हर रिश्ता नए समय के साथ बदल रहा है। सपनों की होम डिलिवरी, दौड, ममता इनकी बहुत मशहूर रचनाऐ हैं। इन सब में स्त्री और पुरूष मानसिकता को बहुत ही सुंदर ढंग से दर्शाया गया है। पुरूष के हर पहलू जैसे पिता, पुत्र और औरत के हर पहलू मां, बेटी, बहू, पत्नी को भी अत्यंत सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। रूचि शर्मा, डाली, मिसेज सहाय , रेखा इसके उदाहरण है। जीवन में दो भिन्न मानसिकता रखने वाले पुरूषों को पाते है। हम पूरी तरह से यह नही कह सकते है कि हमेशा पुरूष दंभी होता है। एसे भी हमारे यहा पुरूष है जो औरतों को अत्यंत सम्मान देते है। सपनें की होम डिलिवरी नए जमाने के बदलते रिश्तों को ड्यान में लिखकर लिखा गया है। हर रिश्ता नए समय के साथ ताल बैठाने की कोशिश कर रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी का रिशता काफ़ी मायने रखता है। दोनो जीवन की गाडी का महत्वपृण पहिया है। सच्चे रिश्ते में एक भी अगर ढीला पड जाए तो दूसरा पूरी तरह से दुर्बल बन जाता है।

KEYWORDS:

परिचय, हिदी साहित्य, महिला शक्ति, महिला समस्या, पुरूष मानसिकता.

प्रस्तावना:

ममता कालिया का जन्म उत्तर-प्रदेश के वृंदावन में हुआ। १९६० से ये लगातार लेखन में सक्रिय रही। इन्होंने कहानी, उपन्यास और नाटक में भी अपनी सृजन कला का प्रयोग किया। आजिविका के लिए दिल्ली तथा मुंबई के महाविध्यालयों में अंग्रेजी की प्राध्यापिका रही। १९७३ से २००१ तक इलाहाबाद के एक डिग्री कालेज में प्राचार्य तथा भारतीय भाषा परिशद कोलकाता की निदेशक रही। इन्हें उ.प्र हिंदी संस्थान का महादेवी सृमिति पुरस्कार एवं यशपाल सृमिति सम्मान से नवाजा गया है। सावित्री बाई फ़ुले सम्मान भी इन्हें मिला है। हिंदी साहित्य सम्मेलन का अमृत सम्मान भी इन्हें प्राप्त हुआ है। इनकी रचनाऐ है, बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लियां, एक पत्नी के नोट्स, दौड इत्यादि।

ममता कालिया हिंदी कथालेखन में एक स्तरीय मापदंड है। हिंदी के कथा-साहित्य के पाठक इनके लेखन को बडी उम्मीद से देखते रहे हैं। इनकी रचनाऐ तात्कालिक और पडते ही नष्ट हो जाने वाली लोकप्रियता की बजाए पाठक को एसे रचना संसार से अवगत कराती है जिसका निवासी स्वयं पाठक भी है। इनकी रचनाओं में बांधकर रखने वाला वह गुण है, जिसे उत्क्रूष्ट स्तरीयता के साथ रखना लेखकीय साधना का काम है।

सारांश- ममता कालिया चूंकि स्वयं एक कामकाजी महिला थी इसकारण इनकी रचनाओं में कामकाजी महिलाओं के जीवन में आने वाली समस्याओं को हम अच्छी तरह समझ सकते है। सपनों की होम डिलिवरी यह उपन्यास एक बहुत ही प्रभावशाली उपन्यास है, जहां हम रूचि शर्मा को एक पाक-कला विशेषग्य के रूप में पाते है। पति के साथ रूचि एक अच्छी ग्रहिणी के रूप में रहना चाहती थी, किंतु पति पूरी तरह से दंभी पुरूष मानसिकता के साथ जीता था, पत्नी की शौहरत उसे फ़ूटे आंख नही सुहाती थी। वह पत्नी को मानसिक यातनाऐ पहुंचाता था। रूचि ने काई संयम के साथ सब कुछ सहा। किंतु जब पति ने उसे शारीरिक यातना पहुंचाने की कोशिश की, तब रूचि की

सहनशीलता जवाब दे गई। रूचि ने तुरंत घर छोड दिया। रूचि ने बहुत जिम्मेदारी से अपने को संभाला। अब उसने पाक-कला शास्त्र में अपनी पहचान बना ली थी। टी.वी कार्यक्रम बहुत मशहुर होने लगा। कार्यक्रम की टी.आर.पी बढने लगी। पति और भी गैर-जिम्मेदार बन गया, इतना चरित्रहीन बन गया कि बच्चे के सामने भी उसने शराब पीना नही छोडा। बच्चा अपने पिता की आदत से इतना वाकिफ़ हो गया कि खुद बच्चा पिता को चुस्की पियो पापा कहता था। इसतरह हम रूचि में एक लगन और कार्यतत्परता को देखते है और दूसरी तरफ़ पति के खोकली विचारधारा को पाते है। रूचि ने अपने खुद के बलबूते पर फ्लैट खरीदा। एक अनुशासित जिंदगी जी रही थी। इस बीच रूचि के जीवन मे एक पुरूष आया, रूचि की प्रतिभा से वह काफ़ी प्रभावित था। धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के करीब आने लगे। रूचि की प्रतिभा का वह कायल था। रूचि को वह सम्मान देता था। रूचि को उसने शादी का प्रस्ताव भी दिया। इसतरह हम रूचि के ही जीवन में दो भिन्न मानसिकता रखने वाले पुरूषों को पाते है। हम पूरी तरह से यह नही कह सकते है कि हमेशा पुरूष दंभी होता है। एसे भी हमारे यहा पुरूष है जो औरतों को अत्यंत सम्मान देते है। सपनें की होम डिलिवरी नए जमाने के बदलते रिश्तों को ड्यान में लिखकर लिखा गया है। हर रिश्ता नए समय के साथ ताल बैठाने की कोशिश कर रहा है।

यहां रोना मना है, इस एकांकी में कालिंदी एक हस्ती-खेलती लडकी है, अपने परिवार की लाडली। जैसे कि हर लाड्ली को अपने ससुराल जाना होता है, वैसे ही हप्पो पुकारी जाने वाली कालिंदी के जीवन में ब्याह का रस्म होने वाला था। आज बिटिया की शादी है, बेटी ने हर लडकी की तरह विवाह के सुंदर सपने संजोये हैं। शादी हो गई, विदाई भी हो गई, तांगा आकर एक पुराने ढंग के मकान के सामने रूका। ससुरजी ने अपने बेटे मोहन को जल्दी से पोशाक उतारकर देने की बात कही। कालिंदी के आश्चर्य की सीमा न रही , जब उसने ससुरजी को एसा करते

हुए देखा। सभी महिलाओं ने उसके शक्ल सूरत पर टिप्पणी की। इसतरह हमारे समाज की कुछ असभ्य महिलाओं की मानसिकता का हमारे सामने प्रदर्शन होता है। सासुमां ने अपने बेटे को बहु के खिलाफ़ भडकाने में कोई कसर नही छोडी। आते साथ बहू को घमंडी और कामचोर कहा। मोहन ने अपने पुरूष दंभ का प्रदर्शन किया। अखबार पढ रही कालिंदी के हाथ से अखबार छीना, और कहा कि जाओ बरतन धोवो। कालिंदी से मोहन ने यह भी शिकायत की कि घर का कोई सदस्य उससे खुश नही है। और कालिंदी कोई लाड साहब की बेटी नही है। जब कालिंदी ने भी अपने पक्ष में सफ़ाई दी तो मोहन का पारा चढ गया। कालिंदी पर चिल्लाने लगा। इसतरह पुरूष समझते है कि एक बार औरत की शादी हो गई तो औरत को उसका और उसके परिवार का गुलाम बनके रहना होगा। कोई भी उसकी पत्नी को थप्पड मारे किंतु पत्नी को चूं भी नही करना होगा। जितना उसकी पत्नी अत्याचार सहे उतनी वह संस्कारी मानी जाएगी। खुद की जेठानी जो खुद इन बातों को सही थी, आज वह भी नई दुल्हन को सलाह देने में नही चूकती, बल्कि मजे लूटती है कि क्या उसके साथ जो हुआ, वही बराबर उसकी साथी बहु के भी साथ हो रहा है या नहीं। सब के उकसाने पर मोहन कालिंदी की चोटी खींच उसका सिर दीवार से टकरा देता है। इस अत्याचार से पीडित कालिंदी बरतन मांज रही होती है कि परिवार से चिटठी आती है कि कालिंदी की मां अब नही रही। कालिंदी एक्दम पुतली बनकर बैठ जाती है। सासू मा की नजर जब बहू पर पढती है तो फ़िर से मिजाज के साथ कालिंदी को झिडकती है। एसे ससुराल में सचमुच स्त्री की मनोवेदना हमारे दिल को छू जाता है। हमारा दिल और भी संवेदना से भर जाता है जब हम सासू मां का कालिंदी के मा के गुजर जाने पर यह कहते हुए देखते है कि अब छोटे की शादी है, और घर में शादी से जुडी जिम्मेदारियों को कौन निभाएगा। कौन काम करेगा। मोहन के सामने कालिंदी ने घर जाने की बात कही। मोहन गुस्से से आग बबुला हो गया। उसने कहा अगर वह जाएगी तो यह घर उसे भुला देना होगा। इस घर में जैसा मोहन

के घरवाले रखना चाहिंगे वैसे ही रहना होगा।

यह बहुत ही दुख की बात है कि औरत को अपनी संवेदना जताने का भी कोई अधिकार नही। ससुराल में उसे अपने पीहर वालों के बारे में भी बात करने का कोई अधिकार नही। किंतु बहु के घर मां के देहांत के वक्त भी उसपर दबाव डालना, उसे धमकी देना सरासर जुर्म है।

सेवा एक एसी कहानी है जिसमें ममता कालिया नें बुजुर्ग दंपती की विवशता को दर्शाया है। मां-बाप को एक एसे उम्र में अकेले रह जाना पडता है जहां उनको संतान के साथ की आवशयकता होती है। संतान भले ही अपने भविष्य को लेकर गंभीर हो जाए, अपने आजीविका के लिए मां-बाप से दूर हो जाए, किंतु कम-से-कम जरूरत के समय उन्हें मा-बाप की सेवा को भुलाना नही चाहिए। किसी भी तरह इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसीतरह मां-बाप को अपनी मजबूरी का एहसास न होने पाए। बेटिया नरोत्तमजी को यह कहकर चली जाती है कि वैसे भी मा कोमा मे है, उनका यहा रहना या न रहना कोई फ़र्क नही लाएगा। कम से कम वे अप्ने पिता के सा्थ रहकर उनका मनोबल बडा सकती थी। बेटा विस्मय आता है किंतु अपने काम में व्यस्तता को जताकर वह चला जाता है। मा-बाप अपने अंतिम समय में अकेले रह जाते है। पत्नी की आकस्मिक दुर्घटना ने नरोत्तमजी को मानसिक रूप से कमजोर बना देता है। वे अपने को बडा ही निस्सहाय महसूस करते है। हमारी भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी का रिशता काफ़ी मायने रखता है। दोनो जीवन की गाडी का महत्वपृण पहिया है। सच्चे रिश्ते में एक भी अगर ढीला पड जाए तो दूसरा पूरी तरह से दुर्बल बन जाता है।

दौड ममता कालिया की लघु उप्न्यास या दीर्घ कहानी है। रेखा और राकेश ने मध्यमवर्गीय मां-बाप की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। पवन और सघन उनके बेटे है। एक साफ्ट वेयर इंजीनियर है तो दूसरा हार्ड वेयर। दोनो बच्चे अपने-अपने नौकरी के लिए बाहर चले जाते है। रेखा और राकेश प्रयास करते

है कि बच्चों से टकराव की स्थिति न पैदा हो। फ़िर भी कभी-कभी छोटे-छोटे सलाह देने पर उन्हें यह सुनना पडता है कि वे अपने विचारों को उनपर न थोपे। इस उपन्यास में मि. सिन्हा के गुजर जाने पर उनके बेटे को विदेश से आने में तक्लीफ़ हुई, उसने कहां आप पिता का अंतिम संस्कार किसी से करवा ले। इस उप्न्यास में भी ममताजी ने बदलते मान्वीय मूल्यों का अंकन किया है। मा बाप सिर्फ़ बच्चों का भला चाहते है। पति-पत्नी एक दूसरे के साथ अपना अंतिम समय काट लेते है, किंतु इनमे एक ने भी अगर दूसरे का साथ छोड दिया तो दूसारा बहुत अकेले पड जाता है। यह एक वास्तविकता है।

वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया किसी को दोषी नही ठहराती, न किसी का पक्ष लेती है, न किसी को आरोपी के कट्घरे में दालती है। जीवन एक मूल संघर्ष है जिसमें हम सब को संघष करना पडता है। एकतरफ़ वयस्क व्यक्तिता है, दूसरी तरफ़ निजी सपेस । दूसरी तरफ़ समाज के पुराने सांचे है, जिसमे यह चीज अट नही पाती।

सहायक ग्रंथ सूची

1. ममता कालिया, (२०१६), सपनो की होम डिलिवरी, लोकभारती प्रकाशन,कानपुर.
2. ममता कालिया, (२००५), दौड, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.